विशारद द्वितीय वर्ष

तबला - पखावज

पूर्णांक : 400, न्यूनतम : 180
क्रियात्मक : 250, (मौखिक : 200 + मंचप्रदर्शन : 50) न्यूनतम : 128
शास्त्र : 150 न्यूनतम : 52 (26 + 26)

प्रथम प्रश्न-पत्र

शास्त्र :-

1) पं. भातखंडे एवम् पं. पलुस्कर ताललिपि पद्धतियों का विस्तृत अध्ययन।
2) ताल के दश प्राणों का संक्षिप्त अध्ययन तथा क्रिया, अंग, जाति तथा यति का विस्तृत अध्ययन।
3) कर्नाटक एवम् उत्तर भारतीय ताल पद्धति का अध्ययन।
4) भारतीय संगीत में प्रचलित अवनद्ध वाद्यों की पाश्चात्य अवनद्ध वाद्यों के साथ तुलना।
5) लय तथा लयकारी के अंतर का ज्ञान तथा निम्नलिखित तालों में आड, कुआड और बिआड़ लयकारी की बंदिशों कों सम से समतक ताललिपि में लिखना।

   (1) त्रिताल (2) झपताल (3) धमार (4) सूलताल

6) निम्नलिखित पारिभाषिक शब्दों की उदाहरण सहित व्याख्या :

   उठान, त्रिपल्ली एवम् चौपल्ली गत, फरमाईशी गत, फरमाईशी चक्रदार, कमाली चक्रदार, रौ, लग्गी, लडी तथा किस्म।

7) भारतीय शास्त्रीय संगीत, सुगम संगीत, लोकसंगीत में प्रयुक्त होने वाले निम्नलिखित वाद्यों का विवरण :

   तानपुरा, हारमोनियम, पखावज, मृदंगम, ढोलक, ढोलकी (नाल) खोल, संबल, गुदुम, एकतारा, तविल, शहनाई।

द्वितीय प्रश्न-पत्र

1) तबला/पखावज वाद्य का भारतीय संगीत में स्थान महत्त्व एवम उपयोगिता तथा तबला / पखावज की उत्पत्ति के संबंध में प्रचलित विभिन्न मतों की समीक्षा।

2) धा) पेशकार, कायदा, रेला एवम् गत इन वादन प्रकारों के रचना सिद्धांत।

धीं) ठेका, प्रस्तार, रेला, एवं गत परन इन वादन प्रकारों के रचना सिद्धांत।

3) तबला तथा पखावज वादन में प्रयुक्त होने वाले वर्णो के निकास की विस्तृत जानकारी।

4) शास्त्रीय, उप–शास्त्रीय और सुगम संगीत के साथ तबला / पखावज की संगति के सिद्धांतो का अध्ययन।

5) पखावज के विभिन्न घरानों की जानकारी।

6) अजराडा, फरूखाबाद एवम् बनारस घरानों की वादन विशेषतायें।

7) एकल तबला वादन :–

अ) वादन प्रकारों की प्रस्तुति का क्रम,

ब) प्रभाव कारक प्रस्तुतिकरण के गुणतत्त्व,

क) पढंत की आवश्यकता।

8) ताल निर्माण के नियम

9) निम्नलिखित वादकों का जीवन परिचय तथा सांगीतिक योगदान।

उ. नत्थुखाँसाहब, उ. शम्भु खाँ, उ. वाजीद हुसेन, उ. आबीद हुसेन, उ. चुडीया ईमाम बक्ष, पं. गोविंदराव बन्हाणपूरकर, पं. पर्वतसिंह, पं. अयोध्याप्रसाद।

क्रियात्मक :

(तबला के विद्यार्थी) :–

1) त्रिताल में निम्नानुसार वादन

अ) दिल्ली अथवा फरूखाबाद घराने का पेशकार विस्तार पूर्वक बजाना।

ब) 'त्रक' शब्द युक्त चतुस्र एवम त्रिस्र जाति के एक–एक कायदे को छह पलटे तथा तिहाई सहित बजाना।

क) 'धातंग घेतग' इस शब्द समूह युक्त त्रिस्र जाति के एक कायदे का, छह पलटे तथा तिहाई सहित वादन ।

ड) 'गेगेतीट' अथवा 'गेगेनागे' शब्द युक्त कायदा, छह पलटे तिहाई सहित बजाना ।

(पखावज के विद्यार्थी) :–

अ) चौताल, धमार, सूलताल, तीव्रा, अदिताल, में कुदऊसिंह, तथा नाना पानसे घराने की 2-2 बंदिशों की पढंत एवं वादन।

ब) उपर्युक्त मे से किन्ही दो तालों में धिरधिर एवं धिड़कना रेले, पल्टे का अपेक्षित तैय्यारी के साथ वादन ।

क) उपर्युक्त तालों में एक एक कमाली चक्रदार परन का वादन

ड) आदिताल तथा धमार मे दो दो बेदम तिहाईयाँ तथा $1\frac{1}{2}$ मात्रा के दमयुक्त सम संख्या तक का वादन ।

2) रेला :–

अ) 'धिरधिर' शब्द युक्त रेले का पाच पलटों एवम् तिहाई सहित अपेक्षित तैयारी में वादन ।

ब) 'दिंगनग' शब्द समुह युक्त पाच पलटे, तिहाई सहित वादन ।

3) गत :–

दो शुद्ध गतें (तिहाई सहित), दो चक्रदार गतें तथा दो त्रिपल्ली गतों का पढ़ंत के साथ वादन

4) तिहाई :-

दो बेदम तथा दो $1^1/_2$ मात्राओं के दमयुक्त सम से सम युक्त वादन

5) निम्नलिखित तालों की दुगुन तिगुन व चौगुन हाथ से ताल देकर पढना तथा बजाना :-

एकताल झूमरा, सूलताल, धमार.

6) निम्नलिखित तालों मे से किसी एक ताल में 10 मिनीट का एकल वादन (परीक्षक के निर्देशानुसार वादन की प्रस्तुति करना) मत्ततात, रूद्रताल, आडाचौताल

7) तबला/पखावज सुर में मिलाना, बाद मे आधा सुर चढ़ाना या उतारकर मिलाना।

मंचप्रदर्शन :-

1) विद्यार्थी के इच्छानुसार 30 मिनिट तक स्वतंत्र तबला/पखावज वादन करने की क्षमता।

2) दीपचन्दी, कहरवा अथवा दादरा ताल में सुंदर लग्गियाँ।

अंकपत्रिका :

सूचना :- *1) इस परीक्षा के लिए हर एक विद्यार्थी को 60 मिनिट का समय निर्धारित किया गया है।*

2) विद्यार्थी को सभी वादन लहरा के साथ साथ करना होगा।

3) पखावज के लिए पाठ्यक्रमानुसार पखावज के ताल पूछे जाएँगे।

4) मंच प्रदर्शन निमंत्रितों के सम्मुख स्वतंत्र रूपसे होगा, जिसके लिए अतिरिक्त समय तथा 50 अंक निर्धारित किये गये हैं।

1) त्रिताल मे इस वर्ष के पाठ्यक्रमानुसार वादन करने की क्षमता — 55 अंक

2) धिरधिर एवं ''दिंगनग'' इन शब्द समूहों से युक्त रेले का पल्टों एवं तिहाई सहित वादन — 20 अंक

3) दो शुद्ध, दो चक्रदार तथा दो त्रिपल्ली गतों का पढ़ंत के साथ वादन — 30 अंक

4) दो बेदम तथा दो $1\frac{1}{2}$ (डेढभाग) मात्रा की दम युक्त समसे सम तक तिहाई बजाने का अभ्यास — 15 अंक

5) पिछले पाठ्यक्रम के तालों के अतिरिक्त एकताल, झूमरा, सूलताल तथा धमार ताल की दुगुन, तिगुन एवं चौगुन हाथ से ताली देकर पढ़ना तथा बजाना — 15 अंक

6) किसी एक ताल मे परीक्षक के निर्देशानुसार एकल वादन मत्ततताल (9) रुद्रताल (11) आड़ा चौताल (14) — 40 अंक

7) साथ संगत का अभ्यास — 15 अंक

8) वाद्य को स्वर में मिलाना — 10 अंक

कुल मौखिक – 200 अंक

मंच प्रदर्शन :

1) किसी ताल में 30 मिनिट का स्वतंत्र तबला वादन – 35 अंक

2) दीपचन्दी, कहरवा तथा दादरा में कलात्मक लग्गियाँ – 15 अंक

कुल 50 अंक